अजायब बानी

मासिक पत्रिका

सितम्बर-2025

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

HAPPY BIRTHDAY BABAJI

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–पांचवां	सितम्बर–2025

03 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
सच्चा धन्यवाद

21 सवाल–जवाब
सवाल–जवाब

27 महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविंद से
आप कैसे हैं?

31 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले
भजन–अभ्यास

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 **व** 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 282 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ, सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ

बाबा जी के शुभ जन्मदिवस 11 सितम्बर की लख लख-लख बधाईयां

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चा धन्यवाद

DVD-185

11 जनवरी 1992 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी मुम्बई

मैं उस परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के पवित्र चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर अपार दया की। सहजो बाई कहती हैं, ''अगर मैं सारी धरती का कागज बना लूं, सारी वनस्पति की कलम बना लूं और सारे समुंद्र की स्याही बना लूं फिर भी मैं अपने गुरु की महिमा बयान नहीं कर सकती।'' ये भी हम जुबान से ही कहते हैं कि हम उनका धन्यवाद करते हैं। प्यारेयो, सच्चाई तो यह है जब हम अंदर जाकर उनकी पोजिशन देख लेते हैं तभी हम उनका **सच्चा धन्यवाद** कर सकते हैं। उनका दया करने का और समझाने का अपना ही तरीका था।

महाराज सावन सिंह जी इब्राहिम शाह बलख बुखारा की मिसाल दिया करते थे कि वह शहर में घूम रहा था, एक शराबी आदमी किसी गंदी नाली में गिरा हुआ था। बादशाह को तरस आया, उसने शराबी आदमी का मुँह साफ किया और उसे अपनी गोद में बिठा लिया। जब शराबी को होश आया उसने अपने आपको बादशाह की गोद में देखा तो शर्म महसूस करते हुए कहा, ''बादशाह सलामत, मैं किस मुँह से आपका धन्यवाद करूं, आप एक बादशाह हैं और मैं एक गंदा आदमी नाली में गिरा हुआ था।''

यह तो एक मिसाल है लेकिन सच्चाई यह है कि हम भी गंदी इन्द्रियों के भोगों से गंदे हुए हैं। जब उस महान हस्ती के दिल में प्यार उठता है तो वे हमारी आत्मा पर रहम करने के लिए और हम गंदे जीवों को उठाने के लिए बिमारियों का खोल धारण करके आते हैं। वे सिर्फ जीवों को उभार देने के लिए, रहम करने के लिए आते हैं और रहम ही करते हैं।

जिस तरह शराबी को उस समय होश आई कि वह बादशाह की गोद में है उसी तरह जब हम सारे पर्दे उतारकर अपनी आत्मा को गुरु की गोद में पहुँचा देते हैं, उस समय ही **सच्चा धन्यवाद** होता है। वे सच्चखंड में रहने वाले जहां मौत–पैदाईश नहीं, गर्मी–सर्दी नहीं, वेद–शास्त्र नहीं, दिन–रात नहीं, वे शान्ति के देश को छोड़कर सिर्फ हमारी मैली आत्माओं पर रहम करने के लिए आते हैं।

उनका जीवों को समझाने का अपना ही तरीका होता था, वे बात किसी ओर से करते थे और पास खड़ा हुआ कोई और शर्म महसूस करता था। वे कहा करते थे कि गुरु अभूल ताकत है आखिर मैंने ही इन्हें बख्शना है, मैं इन्हें ज्यादा क्यों गिरने दूं। ये उनकी दया के खास चिह्न होते थे। जिन्होंने आँखों से उस प्रभु को चलते–फिरते और बातें करते हुए देखा है, उनके दिल में आज भी उनकी याद ताजा है।

मैं बताया करता हूँ कि कुएँ की सेवा लगी हुई थी, वह कुआँ रेलवे स्टेशन और आश्रम के दरमियान है। महाराज जी सुबह शक्कर और रात की बची हुई रोटियां लेकर आए। प्रेमी जमीन पर बैठे हुए थे वे सबको अपने हाथ से रोटियाँ वरताते गए। मस्ताना जी ने दूर से ही जमीन पर लेटना शुरु कर दिया। महाराज जी ने मस्ताना से कहा, ''ना भई, इस तरह नहीं करते।''

मस्ताना जी रोते हुए बोले कि आत्मा की मैल तो आप 'शब्द–नाम' और अपने स्वरूप से धोएंगे, मैं तो तन की मैल उतार रहा हूँ। उस समय मेरे पास एक चादर थी, मैंने वह चादर महाराज जी के नीचे बिछा दी। उन्होंने उस चादर को पवित्र किया जिसे मैंने संभालकर रखा हुआ है। देखने में वह एक मामूली चादर है, जब परमपिता कृपाल आए तो मैंने उनके नीचे वही चादर बिछाई और उस चादर का इतिहास बताया कि इस चादर पर किसके मुबारक चरण लगे हुए हैं। वे उस चादर पर नहीं

बैठे, उन्होंने उस चादर को उठाकर अपने सिर पर रख लिया और उनकी आँखों में प्यार भरे आँसू आ गए। इस बात की कद्र वही करेगा जो अंदर जाता है इसलिए हम बार–बार उन महान गुरुओं के चरणों में झुकते हैं। आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनें:

हुजूर स्वामी जी महाराज के समय में अगर कोई प्रेमी आरती का सामान इकट्ठा करता था तो वे उसे स्वीकार कर लेते थे। उनके चरणों में कई बीबीयां–बीबी सुक्को, बीबी बुक्को रहती थी। इन बीबीयों के बारे में महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि उनके अंदर इतनी तड़प थी कि वे दर्शन किए बिना खाना तक नहीं खाती थी। उस प्रेमी ने आरती उतारी तो स्वामी जी महाराज ने खुश होकर प्यार भरा शब्द बोला:

आज साज कर आरत लाई। प्रेम नगर बिच फिरी है दुहाई।।

हम जब आरती करते हैं तो आरती का सामान तैयार करते हैं, दीपक रखते हैं, धूप का सामान रखते हैं और विरह भरे शब्द भी बोलते हैं लेकिन प्रेमी रूहों की आरती में दुनिया का सामान नहीं लेते, अपने हृदय का थाल बनाते हैं और अंदर जाकर शब्द की जोत जलाते हैं। वह जोत हवा से नहीं बुझती, उसे न किसी तेल की जरुरत है, न किसी जगाने वाले की जरूरत है सिर्फ गुरु की दया, गुरु की आज्ञा का पालन करने की जरूरत है।

गुरु शब्द की जोत जलाकर सेवक के अंदर रख देते हैं, सेवक तीसरे तिल पर आँखों के पीछे अपने हृदय के थाल में शब्द की जोत जलाकर उस स्वरूप के सम्मुख होता है। जब कोई प्रेमी आत्मा गुरु को प्रकट करने के लिए और परमात्मा से मिलने के लिए अंदर जाती है तो उस प्रेम नगर में दुहाई मच जाती है कि एक प्रेमी आत्मा मात लोक से निकलकर प्रभु के पास आ रही है।

विरह व्यथा के लुट गये डेरे। मिल गये राधास्वामी बिछड़े मेरे।।

रोज की विरह और तड़प थी जिसे शरीर के पर्दे की रूकावट समझता था वह अब समाप्त हो गई, जन्म–जन्मांतर का बिछुड़ा हुआ दोस्त परमात्मा मिल गया। अब आत्मा समझ लेती है कि मैं तो ऐसे ही बाहर भटकती रही यह तो मेरा पुराना यार है, वह इस तरह गले से लग जाती है जिस तरह पतासा पानी में मिल जाता है, अपना रूप खत्म कर देता है। यही हालत इस आत्मा की होती है कि इस आत्मा को इसका बिछुड़ा हुआ स्वामी मिल गया है, शरीर के पर्दे के बीच की अड़चन खत्म हो गई।

जब हम सिमरन के जरिए अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं सूरज, चन्द्रमा और सितारे पार करके गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं, उस वक्त हमारा पर्दा खत्म हो जाता है और गुरु से मिलाप हो जाता है। वहीं जाकर गुरु का सच्चा सेवक बनता है, बाहर हम सच्चे शिष्य बनने की तैयारी कर रहे हैं। अब यह हालत है कि हम जितनी देर बाहर बैठे हैं अगर दस बंदो ने मिलकर यह कह दिया कि यह महात्मा ठीक है तो हमें भरोसा आ जाता है अगर दस बंदो ने मिलकर यह कह दिया कि यह ठग है ठीक नहीं है तो हमारा भरोसा टूट जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि हमने अभी वह विवेक बुद्धि पैदा नहीं की। कबीर साहब कहते हैंः

फुटी आँख विवेक की लिखे न सन्त असन्त।
जाँके संग दस बीस है ताँका नाम महन्त।।

हम किसी महात्मा की जिंदगी नहीं पढ़ते कि क्या इसने अपनी जिंदगी में दस–पंद्रह साल अभ्यास किया है, कोई कुर्बानी की है? हम सिर्फ भीड़ देखते हैं कि इसकी महिमा करने वाले बहुत हैं, हम सोचते हैं कि यही असली महात्मा है। महाराज जी सदा यही कहते रहे, ''आप यह देखें कि किस स्कूल के ज्यादा बच्चे पास होते हैं, किस स्कूल में जिंदगी बनाने की अच्छी तालीम मिलती है। यह न देखें कि उस स्कूल में ज्यादा बच्चे हैं।''

हिरदा थाल सुरत की बाती। शब्द जोत मैं नित्त जगाती।।

यह सारा नजारा अंदर पहली मंजिल सहँस दल कँवल का है कि किस तरह वहाँ जोत का प्रकाश है किस तरह वह सारा ही मंडल जगमगा रहा है। जो अंदर जाते हैं वे देखते हैं कि वहाँ हृदय का थाल और सुरत-शब्द के अभ्यास से शब्द की जोत जलती है। घंटे की धुन प्रकट हो जाती है, मन को शान्ति आ जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के सारे ही पतंगे भस्म हो जाते हैं।

आरत फेरू सन्मुख ठाढ़ी। प्रीत उमँग मेरी छिन छिन बाढ़ी।।

हमें पता ही है कि आमतौर पर मंदिरों में आरती होती है। आजकल सिक्ख भाई भी गुरु ग्रंथ साहब के आगे आरती करते हैं। थाल में दीपक रखे जाते हैं और हम सामने खड़े होकर आरती फेरते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हम आपको सुनी सुनाई बात नहीं कह रहे, हम सदा ही उस गुरु स्वरूप के सामने खड़े होकर आरती फेरते हैं।

तन नगरी बिच बजत ढँढोरा। भागे चोर जोर भया थोड़ा।।

जब घर का मालिक घर में नहीं तो चोरों की मर्जी है कि कुछ छोड़कर जाएं या सारा सामान लूटकर ले जाएं। घर का मालिक बाहर है, चोर घर के मालिक हैं, जब मालिक घर में होता है तो चोर एक–एक करके भाग जाते हैं। जब वहाँ शब्द का प्रकाश हो जाता है तो ये एक–एक करके निकल जाते हैं, उनका जोर कम हो जाता है। महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंग में सदा ही यह मिसाल दिया करते थेः

पाँचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ।।

वे कहा करते थे कि मैं बहुत साल इस शब्द के गिर्द रहा कि कबीर साहब की पाँचों लड़कों को मारने की क्या भावना है। जब बाबा जयमल सिंह जी मिले तो यह मसला अपने आप ही हल हो गया कि कबीर साहब का भाव कि ये पाँचों डाकू काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार बालकों की शक्ल में अंदर से निकलते हैं। काम कहता है कि अब मेरा तेरे पास गुजारा नहीं, क्रोध कहता है कि मैं भी जा रहा हूँ। ये एक–एक करके निकल जाते हैं। काम की जगह शील आ जाता है, क्रोध की जगह क्षमा आ जाती है, लोभ की जगह संतोष आ जाता है इसी तरह विरोधी ताकतें निकल जाती हैं और अंदर दयाली ताकतों का राज हो जाता है।

हम ऋषि–मुनियों का इतिहास पढ़ते हैं कि किस तरह उन्होंने बहुत साल तप किया। हम पारासुर ऋषि की कहानी आम पढ़ते हैं कि उन्होंने अठासी हजार वर्ष तप किया, पूर्ण योगी बनकर घर वापिस आ रहे थे। रास्ते में नदी पड़ती थी। मल्लाह खाना खा रहे थे, ऋषि ने उनसे कहा कि मुझे नदी पार करवा दें। मल्लाह ने कहा कि हम खाना खा लें फिर आपको पार कर देते हैं। जिनकी रसाई ऊपर तक नहीं होती उनके पास श्राप होता है, ऋषि ने कहा कि मुझे नदी पार नहीं कराओगे तो मैं तुम्हें श्राप दे दूँगा।

जो काम माता–पिता करते हैं वही काम बच्चे भी कर लेते हैं। लड़की ने कहा कि पिता जी आप खाना खाएं, मैं इन्हें नदी पार करवा देती हूँ। लड़की ने नाव का रस्सा खोला, चप्पू हाथ में लिया और पारासुर ऋषि से कहा, ''आओ महात्मा जी, मैं आपको पार ले चलती हूँ।''

पारासुर सारी जिंदगी जंगलों में रहा था, उसने कभी औरत की शक्ल नहीं देखी थी, उसने रास्ते में अपनी इच्छा जाहिर की। लड़की ने कहा कि महात्मा जी, सूरज देख रहा है। मन नहीं रोका वहाँ धुंध कर दी फिर लड़की ने कहा कि जल देवता देख रहा है, यह हमारे मंद कर्मों की गवाही देगा। मन नहीं रोका और कहा, बरेती हो जाए, कमाई खराब की। आखिर उसके साथ इच्छा पूरी की। ऋषि ने सारा तप बर्बाद कर दिया लेकिन मन नहीं रोका क्योंकि उसे कोई पूरा गुरु नहीं मिला था जो उसे बताता कि मन अंदर ही वकील की तरह सलाह देता है। जीव एक सलाह से नहीं गिरेगा तो दूसरी सलाह से गिरा देता है। ऐसा नहीं कि ऋषि–मुनि बुरे थे, वे अच्छी आत्माएं थे, उन्होंने इतने–इतने साल भूख–प्यास काटी।

परमात्मा के दर्शनों के लिए लाखों ही लोग जंगलों में डेरे लगा लेते हैं, घर–बार छोड़ देते हैं। अन्न–पानी के बगैर सूखकर हरड़ की तरह हो जाते हैं, उनकी पसलियां दिखने लग जाती हैं लेकिन दर्शन फिर भी नहीं होता आखिर उदास हो जाते हैं। वे फिर बस्ती में आ जाते हैं, बस्ती में आकर वही दुनियादारी करने लग जाते हैं अगर पूरा गुरु मिला होता तो वे कभी मन के धोखे में नहीं आते।

सील छिमा आय थाना गाड़ा। काम क्रोध पर पड़ गया धाड़ा।।
स्वामी मेहर करी अब भारी। मैं भी उन चरनन बलिहारी।।

आप कहते हैं कि उस स्वामी परमात्मा गुरु ने बड़ी भारी दया की अब मेरे दिल में सच्ची प्रीत, सच्ची इज्जत, सच्ची श्रद्धा पैदा हो गई है। जिस तरह उन्होंने खुले दिल से दया–मेहर की उसी तरह मुझे भी किसी लोक

लाज की परवाह नहीं। कबीर साहब ने बिरह के हाल के बारे में बताया, ''हे प्रभु, हे गुरु, तू मेरी आँखों में आ जा। मैं आँखें बंद कर लूं, न तू दुनिया में किसी को देखे और न ही मैं दुनिया में किसी को देखूं। बस, तू मुझे देखे और मैं तुझे देखूं।''

अब तो सरन पड़ी राधास्वामी। राखो सँग सदा अन्तर जामी।।

गुरु को हम तब तक ही दया करने के लिए कहते हैं जब तक हम अंदर नहीं जाते। जो लोग थोड़ा बहुत भी अंदर जाते हैं, थोड़ा बहुत तीसरे तिल पर टिकते हैं उनके सवाल खत्म हो जाते हैं, वे **सच्चा धन्यवाद** करते हैं। पश्चिम के हजारों प्रेमी इंटरव्यू में आते हैं कोई एक आधा ही नया नामलेवा आकर सवाल करता है। बाकी प्रेमी कहते हैं कि हम जब वहाँ से चले थे तो हमारे मन में बहुत सवाल थे लेकिन जब दर्शन किए, सतसंग सुना सारे सवाल खत्म हो गए अब सिर्फ आपको देखने के लिए आए हैं।

मैं सेठ हीरालाल के मुत्तलिक बताया करता हूँ कि जब परमपिता कृपाल इस संसार से 'शब्द' में जाकर समा गए तब हीरालाल बंगला साहब जाया करता था। मैं दुनिया के किसी भी हिस्से के प्रेमी को नहीं जानता था, मेरी जिंदगी का एक खास मकसद उस प्रभु की तलाश थी जो मैं अंदर बैठा इंतजार करता रहा।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि तू अंतर्यामी है, गुरु सचमुच अंतर्यामी होते हैं, उन्हें पता होता है कि कौन मेरी याद में बैठा है। यह उनका ही मिलने का जरिया था इसलिए उन्होंने हीरालाल फैमिली से मिलाप करवाया। मैं नहीं जानता था कि कोई दिल्ली में या अमेरिका में मुझे जानने वाला भी है। मैं उन लोगों की भाषा नहीं जानता था तो क्या समझ सकता था। यह जो कुछ हुआ उस प्रभु कृपाल की दया थी।

सेठ हीरालाल बंगला साहब जाया करता था कि मेरे पास नाम है, चलो वहाँ गुरु चर्चा सुन आते हैं। मैं तीन-चार दिन उनके घर में रहा। न

उन्होंने मुझे बुलाया न मैंने उन्हें बताया कि मैं कौन हूँ। उनके गुरुदेव ने अंदर ही उसे बताया कि तेरे घर कौन आया है और तूने किस तरफ मुँह किया हुआ है? वह परिवार को लेकर मेरे पास आया तो सदा के लिए इस गरीब फकीर का बन गया।

मैं बताया करता हूँ कि तीन साल पहले जब वह मुझसे मिलता चाहे वह मेरे पास घंटा, चाहे आधा घंटा या दो मिनट बैठे, उसके सारे सवाल खत्म थे। मैं उससे पूछता कि बताओ सेठ जी, आप कनाडा से आए हो। उसने कहना, ''कहने के लिए कुछ नहीं है।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''शिष्य विनती करता है कि तू मुझे अपने चरणों से लगाए रखना।''

मैं हमेशा ही महाराज सावन सिंह जी की यह बात बताया करता हूँ कि हम उतनी देर ही कहते हैं कि हम डेरे जाते हैं जब तक हमारी आँखें बंद हैं। जब आँखें खुल जाती हैं तो पता चलता है कि कोई डेरे लेकर जाता है। जितनी देर हमारी आँखें बंद हैं हम तब तक ही कहते हैं कि हम भजन पर बैठ रहे हैं। जब अंदर मिलाप हो जाता है और वह आँख बन जाती है फिर पता चलता है कि कोई अंदर बैठकर याद दिला रहा है इसलिए जो प्रेमी अंदर जाते हैं वे कहते हैं, ''हे सतगुरु, आप मुझे अपने चरणों से लगाए रखना, दूर न कर देना।''

मेरे और न कोई दूजा। मेरे निस दिन तुम्हरी पूजा।।

अब सेवक अंदर गुरु से कहता है कि अब न भाई का मोह है, न बंधु का मोह है न विषय-विकारों का मोह है। अब मेरी माता भी तू है पिता भी तू है, बहन-भाई भी तू है। तू सबसे प्यारा है। गुरु साहब कहते हैंः

मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूँ ते पिआरा राम राजे।।

अब तू सबसे प्यारा है। धर्मदास ने कबीर साहब से यही कहाः

सुपनेहु इच्छा न उठे, गुरु आन तुम्हारी हो।।

हे सतगुरु, मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ कि अब सपने में भी दुनिया की इच्छा नहीं उठती। सोता हूँ तो आपकी याद है, उठता हूँ तो आपकी याद है, मैं आपके साथ जुड़ा हुआ हूँ। सपने में भी आप ही हैं। जब याद शक्ति इतनी बन जाती है तो जिधर देखते हैं गुरु की मन मोहनी सूरत आँखों के आगे रहती है। इसलिए आप कहते हैं कि आप मेरी लाज रखें, मैं आपके चरणों में आई हूँ। सोती हूँ, जागती हूँ जो भी पूजा है गुरु की याद है, सच्ची पूजा उस परमात्मा गुरु की याद ही होती है।

तुम बिन और न कोई जानूं। छिन छिन मन में तुमको मानूं।।

मैं अपने गुरु परमपिता कृपाल की दया से सदा ही बताया करता हूँ कि मुझे उनके सामने यह कहने का मौका मिला कि मैंने न सतनाम को देखा है और न राधास्वामी को देखा है, न ही अल्लाह, राम, रहीम को देखा है, मैंने तो आपको ही देखा है। मेरे पति भी आप हैं, बहन–भाई भी आप हैं। यह हौसला भी उन्होंने ही दिया था। प्यारेयो, जब ऐसी हालत हो जाती है कि मैं आपके बगैर और किसी को नहीं जानता। ऐसा कौन कहेगा जो उन्हें अंदर जाकर देखता है, यह समझ भी उन्होंने ही बनाई।

मैं मछली तुम नीर अपारा। केल करूँ मैं तुम्हारी लारा।।

आत्मा विनती करती है कि मैं पानी का जीव हूँ। हमें पता है कि मछली के दिल में पानी की कितनी तड़प होती है। आप मेरा दरिया हैं, मैं आपके जोर पर ही उछल–कूद करती हूँ, आप ही मेरा आसरा हैं।

मैं पपिहा तुम स्वाँति के बादल। सुख पाये दुख गये हैं रसातल।।

मेरी आत्मा पपीहे की तरह आपकी स्वाँति बूँद के लिए तरस रही है। यह आपकी अपार दया है जो आप मुझ पर बादल की तरह दया की बारिश करने के लिए आए हैं।

तुम चंदा मैं कमोदन हीनी। तुम्हरी लगन में निसदिन भीनी।।

आप चन्द्रमा हैं, मैं गरीबनी कमोदनी हूँ। कमोदनी पानी में रहती है, उसका प्यार चन्द्रमा से होता है, वह चन्द्रमा के साथ जुड़ी रहती है।

मैं धरनी तुम गगन बिराजे। कैसे मिलूं मैं तुम संग आजे।।

चन्द्रमा आकाश में है, कमोदनी जमीन पर है। यह लाख–करोड़ कोस का फासला है। आत्मा मातलोक में रहती थी परमात्मा सच्चखंड में बैठा था, जीव विषय–विकारों का आशिक था जिसे रास्ते का पता नहीं, वह किस तरह मिल सकता है? वह रहम का समुन्द्र जब उछलता है तो गरीबनी कमोदनी की सुनता है।

महाराज जी कहा करते थे कि कोई गरीब बने वह दया करने के लिए तैयार है। जो गलती करके अपनी गलती न माने वह एक गलती और कर रहा होता है इसलिए गुरु के आगे सच्ची गरीबी, सच्ची आजजी अंदर जाकर ही आती है। अब शिष्य की आत्मा के अंदर तड़प और नम्रता आ गई है कि आप सच्चखंड में बैठे हैं, मैं गरीबनी आत्मा धरती पर विषय–विकारों में फँसी हुई हूँ। मैं आपसे किस तरह मिल सकती हूँ, मेरे पास कौन सा साधन है जिससे मैं आपसे आकर मिलूँ?

सुरत निरत से चढ़ कर धाऊँ। कभी न छोड़ूँ अस लिपटाऊँ।।

हमारी आत्मा की दो ताकतें हैं–एक सुरत और दूसरी निरत है। सुरत सुनने वाली शक्ति और निरत देखने वाली शक्ति को कहते हैं। अगर आप दया करें तो मैं सुरत निरत का जहाज बनाऊँ और प्यार के परों पर चढ़कर आपसे मिल लूं। मैं आपसे इस तरह लिपट जाऊँ कि फिर बिछड़ू ही नहीं। पहले ही आपसे बिछुड़कर पता नहीं कितनी पत्नियां बनाई, कितने पति बनाए और कितने घर बनाए।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी से मुझे 'दो शब्द' का भेद मिला था। वे बड़े सख्त थे, उन्होंने मेरे बगैर किसी और

को भेद नहीं दिया था और न ही उन्होंने कोई और सेवक बनाया था। मैं बताया करता हूँ कि किसी महात्मा के चरणों में सेवा रखकर **धन्यवाद** करवा लेना बहुत आसान होता है लेकिन उनसे थप्पड़ खाने बहुत मुश्किल होते हैं। जिस गाँव में बाबा बिशनदास जी रहते थे वहाँ मेरे काफी रिश्तेदार थे। जब मैं आर्मी से आता तो वे भी मेरे पीछे चल पड़ते, सारा गाँव पार करके बाबा जी का आश्रम आता था। मेरे रिश्तेदार कहते कि चलो, अब इसकी खातिर होगी। यह तो निर्लज्ज हुआ फिरता है और हमें भी निर्लज्ज करवा रहा है। रिश्तेदार ताने देने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देते।

जिस बार मैं बाबा बिशनदास के सामने ज्यादा पैसे रखता तो वे ज्यादा थप्पड़ लगाते थे। उन्होंने अपनी जिंदगी में कभी भी मुझे अपने आश्रम से चाय तक नहीं पिलाई थी। यह उनकी दया थी जो उन्होंने मेरी जिंदगी बनाई अगर वे सख्त न होते तो हो सकता है कि मुझमें कोई नुख्स पड़ जाता। वे अपनी मौज में आकर मुझसे कहने लगे, ''तुझे पता है कि तू कितनी बार यहाँ आया है?'' मैंने बैठकर सोचा कि ये क्या कह रहे हैं? मैंने कहा मुझे क्या पता है, मैं तो अंधा जीव हूँ अगर पता होता तो आपके चरणों में किस तरह आता। उन्होंने मेरे पिछले जन्म की हड्डियाँ निकालकर दिखाई क्योंकि मैंने हठ किया था कि कहीं ऐसे ही न कह रहे हों।

उन्होंने हड्डियाँ निकालकर कहा कि तेरे माता-पिता अभी जिंदा हैं अगर तू कहे तो मिलवा देता हूँ। मैंने रोकर कहा कि अभी के माता-पिता ही मुझसे खुश नहीं होते मैं उनके साथ और उलझूंगा, आप मुझ पर दया करें। उन्होंने दया करके मुझे एक परिवार की जानकारी दी कि तूने उनका इतना कुछ देना है और बोझ भी सिर पर उठाना है। मैंने तीन साल प्यार से उनका कर्जा उतारा। परमात्मा ने मेरे पिता के घर में बहुत कुछ दिया था, वहाँ वे मुझसे कोई कारोबार नहीं करवाते थे।

मैं शाम को उस परिवार के लोगों से उनके खेत में मिला। मैंने उनसे कहा कि मैंने रात काटनी है, उन्होंने कहा आ जा। घर आए बातचीत हुई उन्होंने पूछा, ''लड़के तू अच्छे घर का लगता है क्या घर से नाराज होकर आया है?'' मैंने कहा, ''नहीं, मैं नाराज होकर नहीं आया। मैं आपको अपने माता-पिता का पता क्या बताऊं। माता-पिता वही हैं जिन्हें माता-पिता बना लें। मैं आपका कारोबार सेवा समझकर किया करूंगा, मैं अपना ही कमाऊंगा और अपना ही खाऊंगा। मैं निस्वार्थ आपकी सेवा करुंगा।''

मैं उनका भार ढोता और जमींदारे का सारा काम जैसे चारा वगैरह सिर पर उठाकर लाता था। मैं जहाँ से गुजरता वहाँ एक मिस्त्री का घर था, वह किसी हठयोग करने वाले जटाधारी साधु को लेकर आया जिसे काफी अंतर्यामता थी। उस साधु ने मिस्त्री से कहा कि यह बंदा देखने में छोटा सा है, इसके ऊपर जो बोझ है वह इसके वजन से ज्यादा है। मैं देख रहा हूँ कि यह बोझ इसके सिर पर नहीं आ रहा। मैं जब दूसरी बार उनके दरवाजे के आगे से गुजरने लगा तो मिस्त्री ने मुझे पकड़कर अंदर बुलाया। वहाँ बातचीत हुई तो मैंने उन्हें बताया कि मैं आपको क्या बताऊं, मैं एक विपत्ता का मारा हुआ जीव हूँ। मैंने इतने दिन और इनका बोझ ढोना है, इसके बाद मैं कभी जिंदगी भर सिर पर बोझ नहीं उठाऊंगा।

वे मेरी बात सुनकर और भी परेशान हुए, उस बाबा ने मुझसे पूछा कि तुझे कहाँ से रास्ता मिला है? मैंने उनसे कहा कि मुझे रास्ता तो कोई नहीं मिला, आपकी तरह किसी महात्मा ने कहा कि तुझे इस परिवार का भी देना है। इसलिए अंदर जाकर पता चलता है कि हमने कितनी पत्नियां बनाई, कितनों के हम पति बने, कितनों के बच्चे बने। आत्मा कहती है कि तू मेरा बिछुड़ा हुआ परमात्मा मिला है, अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगी।

मैं गुरबर्ती राधास्वामी के चरन की।लाज रखो मेरी काल से अबकी।।

जिस तरह पतिव्रता औरत अपना धर्म रखती है और पति भी रखते हैं। ऐसा नहीं कि सिर्फ पत्नियां ही रखती हैं, पति का भी उतना ही फर्ज होता है। पतिव्रता औरत बीमार हो जाए तो उसका पति एकदम अपना आराम भूल जाता है, पैसा खर्च करके उसे ठीक करवा लेता है।

व्यभिचारी औरत पर जितनी देर हुस्न–जवानी रहती है तब तक उसके पास अनेकों ही ग्राहक आते हैं। जब बुढ़ापे में बीमारी आ जाती है तो उसे कौन पूछता है। वह संदेश भेजती है कि फलाना आए लेकिन कौन आता है सारे ही उसके तन के चाहने वाले थे, वह तड़प–तड़पकर जान दे देती है। इसी तरह आत्मा कहती कि उस पतिव्रता स्त्री की तरह मैं भी गुरु के चरणों में गुरुवर्ती होकर आई हूँ। मैं आपके बगैर और किसी को नहीं मानती, आप ही मेरे गुरु है, आप ही मेरे दाता है, आप ही प्यारे हैं।

जब हम काल के दाँव पेचों को समझ जाते हैं तो उस समय हम डर कर गुरु के आगे फरियाद करते हैं। जिस जगह मैं आज रह रहा हूँ वहाँ मैं अपनी मौज से नहीं गया और न ही मैंने अपनी मौज से जमीन के नीचे वह जगह बनाई थी, यह सब कुछ परमात्मा कृपाल के हुक्म से हुआ। जब वे मुझे बिठाने लगे तो उन्होंने मेरी आँखों पर हाथ रखा, वह हाथ बहुत पवित्र था जो सारी जिंदगी याद रहेगा। मेरी आँखों से प्यार भरे आँसू निकले कि काल मेरे पीछे पड़ा हुआ है। हे दयालु गुरु, आप मुझ पर दया करें और मेरी लाज रखें। उन्होंने हाथ एक तरफ करके मुझे अपने गले से लगाकर कहा, ''जो हो गया सो हो गया, कोई नई बात नहीं होगी। मैं तुझे अपने से नहीं बिछोड़ूंगा, नए जन्मों में नहीं भेजूंगा।'' आत्मा पुकार करती है कि काल मेरे पीछे पड़ा हुआ है, आप मेरी लाज रखना।

तुम्हरे बल से भइ हूं निचिंती। अब मन में नहिं संका धरती।।

अगर हम गुरु का बल अपने मन में रखें तो काल की कोई ताकत परेशान नहीं करती। हे गुरु, मैं अब निश्चिंत हो गया हूँ। अब आप को मेरा

सारा फिक्र है। हुजूर कहा करते थे, ''अगर बच्चा माता की गोद में दे दें तो माता को सारा फिक्र होता है कि इसे कब नहलाना है, कब खाना देना है अगर बच्चा बीमार है तो माता अपने सुख को भूल जाती है और सारे कारोबार छोड़कर बच्चे को संभालती है। इसी तरह जब हम अपने आपको गुरु के सुपुर्द कर देते हैं तो वह जो करता है ठीक करता है तो सेवक निश्चिंत हो जाता है। प्यारेयो, यह कह लेना बहुत आसान होता है लेकिन अंदर जाकर ही सच्चाई का पता चलता है।

सूर किया स्वामी खेत जिताया। मार लिया मैंने मन और माया।।

पहले स्थूल दुनिया में, स्थूल माया ही हमें भ्रम में डाले रखती है। स्थूल मन ही बस में नहीं आता यह अनेकों किस्म के खेल खिलाता है। मन के खेलों को ऋषि-मुनि भी समझ नहीं सके। यह तो गुरु की दया हुई जिन्होंने मुझे सूरमा बनाकर इन पाँचों डाकुओं और मन के साथ लड़वा दिया।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''जिस तरह पहलवान अखाड़े में उतरते हैं उसी तरह गुरु भी 'शब्द धुन' के साथ अपने सेवक को लेस करके इस अखाड़े में तीसरे तिल पर जहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ है, लड़वाते हैं और थापी देते हैं।

निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जिउ।।

पूर्ण गुरु कानों में फूँक नहीं मारते, नाम तवज्जो होती है, लफ्ज बता देना ही नाम नहीं होता। सरसों को बेलन में डालकर ही पता चलता है कि यह पक्की है, इसमें से तेल निकलेगा और खल भी निकलेगी इसलिए अंदर जाकर पता चलता है। पाखंडी गुरु हमें अंदर कैसे दिखाई देगा वह खुद अंदर नहीं जाता। महात्मा की समझ उस समय आती है जब वह हर मंजिल पर हर साँस के साथ अंदर सेवक को होशियार करते हैं और सेवक की पीठ पर खड़े होते हैं।

खाक मिला सब कपट खजाना। भाग गया दल मोह तुराना।।

हम आम सुनते हैं कि पुराने खंडर पर खजाने पाए जाते हैं, उन पर साँप भी रहते हैं। हमारा रूहानियत का खजाना सच्चखंड में है लेकिन काल ने बाहर मन रूपी साँप बिठा रखा है, यह अंदर ही नहीं जाने देता। कबीर साहब कहते हैं, ''सौ भूतना इकट्ठा करें तो एक मन बनता है।''

गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीन्हा। सुन्न शिखर पर डंका दीन्हा।।

गुरु की दया से यह पहली मंजिल पर गई फिर दूसरी मंजिल त्रिकुटी पर गई और गुरु की दया को साथ लेकर पारब्रह्म में गई।

सिंध महासुन्न बीच में आया। सतगुरु कृपा ने दीन तराया।।

महासुन्न को मुसलमान लोग जुलमात का अंधेरा कहते हैं। सारे हिन्दु शास्त्र बयान करते हैं कि वहाँ बड़ा अंधेरा है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

जिह पैडै महा अंध गुबारा।। हरि का नामु संगि उजीआरा।।

वहाँ बहुत अंधेरा है, नाम प्रकाश का काम करता है हाँलाकि हमारी आत्मा पारब्रह्म में पहुँचकर बारह सूरज के बराबर का प्रकाश कर लेती है लेकिन महासुन्न को पार करने के लिए यह एक दीपक के समान भी नहीं है। वहाँ गुरु साहब कहते हैः

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार, एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अंधार।।

गुरु का मतलब ही है कि जो अंधेरे में प्रकाश कर दे। वहाँ गुरु अपने ही प्रकाश में आत्मा को आगे लेकर जाते हैं। वहाँ जाकर पता चलता है कि कितने महात्मा वहाँ अटके बैठे हैं। मिस्टर ओबराय ने किताब लिखी है जिसमें महाराज सावन सिंह जी के एक नामलेवा भाई सुंदरदास का इंटरव्यू छपा हुआ है। यह इंटरव्यू महाराज कृपाल के साथ काफी संगत के सामने हुआ। सुदंरदास ने बहुत दुनियावी कष्ट झेले, उसमें सारा ही बयान किया गया है कि उसे क्या-क्या कष्ट आए।

हम आमतौर पर रात को खेत में धूना लगाकर बैठ जाते थे, हमारी आठ–आठ घंटे की बैठक होती थी। एक दिन सुंदरदास की टाँग के ऊपर जलती हुई लकड़ी गिर गई, उसकी टाँग की हड्डी भी जल गई लेकिन सुंदरदास को पता ही नहीं चला कि मेरे ऊपर क्या बीत रही है। जब हम अभ्यास से उठे तो उसने कहा, ''आज भजन में जितना रस आया है उतना रस जिंदगी में पहले कभी नहीं आया।''

हमें सुंदरदास की टाँग का बहुत फिक्र हुआ। हम उसे गंगानगर डाक्टर के पास लेकर गए तो डाक्टर ने कहा कि टाँग काटनी पड़ेगी। कुछ दिनों बाद परमात्मा कृपाल आए उन्हें सारी हालत बताई तो उन्होंने कहा घबराओ नहीं। उनके साथ जो दिमागी पहलवान थे उनसे कहा कि देखो भई, इसका नाम भजन है, टाँग जल गई लेकिन इसे पता नहीं चला। उन्होंने कहा कि इसे नीम के पानी से साफ करके सरसों का तेल लगाकर ऊपर चूने की मैल को हटाकर लगाते रहो, यह ठीक हो जाएगा।

जब महाराज कृपाल उसकी आँखे बंद करवा देते थे तो वह संगत के सामने बताता था कि अंदर कितने झूठे गुरु हैं, जिन्हें अंदर क्या–क्या सजा मिलती है। जो झूठे गुरुओं को मानते हैं उन्हें क्या–क्या सजा मिलती है। इसलिए वहाँ गुरु ही अंधेरे में प्रकाश करके लेकर जाते हैं, यह उनकी खास दया होती है।

भँवरगुफा के महल बिराजी। सत्तलोक चढ़ अचरज गाजी।।

स्वामी जी महाराज अंदर के निशान बताते हैं कि रास्ते में भँवर गुफा आई, सतनाम, अलख जो लखा नहीं जा सकता वह भी रास्ते में आया।

अलख लोक में सूरत साजी। अगम लोक को छिन में भाजी।।
पोहप सिंहासन क्या कहुँ महिमा। जहाँ राधास्वामी ने धारे चरना।।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

31 दिसम्बर 1989 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी:– *बहुत प्यारे बाबाजी, मैं हर रोज सिमरन करती हूँ, सतसंग करती हूँ लेकिन फिर भी मेरी भावनाएं बहुत दर्दनाक होती हैं। मेरे अंदर अजीब किस्म का भय और उदासी पैदा होती है, मैं मनोवैज्ञानिक थ्योरियों का सहारा लेने की कोशिश कर रही हूँ। एक और किस्म का ईलाज है जिसमें अलग–अलग तरह के फूलों के तत्वों को निकालकर खाया जाता है। इसके अलावा कई किस्म के खान–पान का सहारा लेकर अपने आपको प्रसन्न रखने की कोशिश करती हूँ।*

मुझे इस बात की चिन्ता है कि सिमरन और सतसंग के अलावा इन उपायों से जो मैं अपने आपको प्रसन्न रखने की कोशिश कर रही हूँ क्या इससे मेरी तहकीकात में फर्क पड़ेगा? अगर मैं इन बुरी भावनाओं की तरफ ध्यान नहीं देती तो ये भावनाएं खत्म होने की बजाय मुझे और ज्यादा तंग करती हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि मैं अपने आप की मदद करने के लिए अभ्यास के अलावा अन्य उपाय करती हूँ क्या यह मेरी गुरुमुखता के लिए ठीक हैं या मेरे मन की चालाकी है जो मुझे आपसे दूर ले जाती है?

बाबा जी :– हाँ भई, मैं आपको इस सवाल का जवाब दो हिस्सों में समझाता हूँ। सबसे पहले तो यह है कि हम मन की भावना में तब तक ही बहते हैं जब तक हममें गुरु पर श्रद्धा नहीं होती। मन हमें गुरु से बहुत दूर ले जाता है, मन बड़ी चालाकी से हर एक को अपनी बातों में लगा लेता है। सन्तों की बानियाँ पढ़ने से पता चलता है कि परमात्मा सर्वव्यापक हैं, कण–कण में बसे हुए हैं। परमात्मा की भक्ति करने वाला परमात्मा में समाकर सर्वव्यापक हो जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं:

हरि हरि जन दुइ एक है बिब बिचार कछु नाहि।।
जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि।।

सन्तों का परमात्मा के साथ इस तरह का रिश्ता होता है जिस तरह पानी पर हवा की लहर आने से उसमें बुलबुले बन जाते हैं, जब हवा निकल जाती है तो फिर पानी बन जाता है। जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं वे परमात्मा को समझ लेते हैं। वे हमें बताते हैं कि हम परमात्मा से कुछ नहीं छिपा सकते, परमात्मा हर जगह देख रहे हैं।

उसी तरह गुरु नामदान के समय 'शब्द–रूप' होकर हमारे अंदर अपनी सीट बना लेते हैं, वे हमें सब जगह देखते हैं। गुरु बहुत सब्र और भरोसे वाले होते हैं। जब हम बुराई करते हैं या मन में बुरे ख्याल उठाते हैं तो सोचकर देखें कि हम किसके आगे उठा रहे हैं, बैठते तो हम भजन में हैं। अगर छोटा बच्चा देख रहा है तो हम उससे डरते हुए कोई बुराई नहीं करते अगर हम गुरु को सर्वव्यापक शब्द रूप समझते हैं तो क्या भजन में बैठे हुए किसी और को याद करेंगे? दिल एक है, चाहे प्रभु को दे दें चाहे दुनिया को दे दें। महाराज जी कहा करते थे, ''आप एक समय में एक ही काम कर सकते हैं, चाहे दुनिया को याद करें, चाहे गुरु को याद करें।''

पप्पू के पिता को सब जानते हैं, इन्होंने परमपिता कृपाल के साथ काफी समय बिताया है। जब महाराज जी अन्तर्ध्यान हुए तो ये लोग किसी पार्टी में शामिल नहीं हुए। मैं इस परिवार को नहीं जानता था, हुजूर कृपाल ही जानें जिन्होंने ये मेल मिलाया। मैं कई बार पप्पू के घर गया। हीरालाल और बीबी प्रकाश बंगला साहब गुरुद्वारे जाया करते थे। मैंने इन्हें कभी गुरुद्वारे जाने से नहीं रोका। कुछ दिनों बाद जब इन्हें समझ आई तो हीरालाल ने बाहरी रीति–रिवाज छोड़कर अंत समय तक अच्छी श्रद्धा रखी।

हीरालाल जब पहली बार कनाडा गया तो डरा हुआ था कि मैं पहले कभी विदेश नहीं गया और अंग्रेजी भाषा भी नहीं जानता लेकिन उसे रास्ते

में कोई दिक्कत नहीं हुई। गुरु की दया उसे सही सलामत कनाडा ले गई, उसने हर जगह गुरु को काम करते हुए देखा। कनाडा पहुँचकर उसने एक टेप भेजी। वह टेप सुनकर मैंने वह टेप पप्पू को दी। उस टेप में उसने गुरु के प्रति अपने यकीन और प्यार की बात की।

उस टेप में हीरालाल ने कहा, ''आप कहते हैं कि गुरु चमत्कार नहीं दिखाते लेकिन मैं कहता हूँ कि गुरु चमत्कार ही दिखाते हैं, देखने वाला चाहिए।'' सवाल अपनी श्रद्धा और भरोसे का है। जब हम पहले टूर पर विदेश गए उस समय पप्पू अंग्रेजी भाषा का इतना माहिर नहीं था, बच्चा ही था। हीरालाल ने डेढ़–दो महीने बाद एक पत्र भेजा, उस समय हम कृपाल आश्रम वरमोंट में थे।

पप्पू ने वह पत्र पढ़कर मुझे सुनाया, वह पत्र बहुत प्यार और भरोसे वाला था। उस पत्र में हीरालाल ने पप्पू को ज्यादा से ज्यादा हिदायतें लिखी थी कि बाबा जी की सेवा करने का मौका हमारे हाथ आया है, इसमें हमने कोई कसर नहीं छोड़नी। पत्र सुनकर मैंने पप्पू से कहा, ''बेटा, तू यह पत्र संभालकर रखना। यह तेरे लिए एक हदीस है।''

जिन्हें गुरु पर भरोसा होता है, गुरु के साथ प्यार होता है उन्हें गुरु की समझ आ जाती है। अगर आप ऐसे लोगों से कहें कि अभ्यास के समय कुछ और सोचें तो वे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं होते, वे गुरु को ही सोचते हैं। हीरालाल ने कभी भी मुझसे दुनियादारी का कोई सवाल नहीं किया। वह जब भी मेरे पास आता तो यही कहता, ''आपकी दया की जरूरत है।''

हीरालाल ने सदा यही कहा कि मैं अपने आप कनाडा नहीं गया,आपने भेजा तो मैं चला गया। जब आप बुलाएंगे तो मैं हिन्दुस्तान वापिस आ जाऊंगा। हीरालाल को अंत समय में बहुत खतरनाक बीमारी हुई जिसका पता आखिरी समय में लगा।

काबिल और प्यारे बच्चे अपने माता–पिता का अहसान मानते हैं, वे जानते हैं कि जब हम बेसहारा थे तब हमारे माता–पिता ने हमारी पालना की। कुलवन्त, पप्पू व परिवार ने सोचा कि इनका इलाज कनाडा में करवाया जाए इसलिए टिकट बुक करवा ली। कुलवन्त और बीबी प्रकाश मेरे पास आए और उन्होंने कहा कि हमने कनाडा की टिकट बुक करवा ली है शायद वे जाएं या न जाएं?

आमतौर पर हीरालाल बीबी प्रकाश के साथ ही मेरे पास आया करता था लेकिन इस बार वह अकेला ही आया तो मैंने उससे पूछा, ''क्या बात है आप अकेले ही आए हैं?'' उसने कहा कि मैं आपसे अकेले में बात करना चाहता हूँ, उसने दो घंटे तक मेरे साथ बात की और ये कहा कि मैं कनाडा जाने के लिए तैयार नहीं। आप भेज रहे हैं तो मैं जा रहा हूँ। मैंने उससे कहा कि उदास होने की जरूरत नहीं, तेरी कोई इच्छा है तो बता। उसने कहा, ''मेरी यही इच्छा है कि मैं हिन्दुस्तान में आकर ही शरीर छोड़ूं।'' मैंने कहा, ''कोई बात नहीं।''

मैंने कुलवन्त को बुलाकर कहा, ''देख भई, तुम कनेडियन लोग बूढ़ो को नर्सिंग होम में भर्ती करवा देते हो लेकिन हम हिन्दुस्तानी लोग परिवार में ही शरीर त्यागकर खुश होते हैं। इसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना। हीरालाल जब भी हिन्दुस्तान वापिस आना चाहे तो एक सेकंड भी मत लगाना।'' कुछ समय बाद हीरालाल का पत्र आया, मैंने पत्र के जवाब में लिखा अगर सेठ साहब वापिस आना चाहते हैं तो उन्हें बिल्कुल मत रोको।

उस समय आसपास वाल हीरालाल को वापिस हिन्दुस्तान लाने की सलाह नहीं दे रहे थे। जब हीरालाल ने कहा कि बाबा जी का पत्र आया है, वे उसे बुला रहे हैं तो परिवार के सब लोग तैयार हो गए। उसकी आखिरी इच्छा भी गुरु कृपाल ने पूरी की। अंत समय में हीरालाल ने पप्पू से पूछा कि बाबा जी ने कपड़े के जूते कब से पहनने शुरु किए हैं। प्रेमी सतगुरु

की परख कर लेता है कि जो शक्ति मेरे अंदर आती है उसके कपड़े कैसे हैं, जूते कैसे हैं। वह अपने परिवार को काफी कुछ बताकर गया। यह गुरु कृपाल की दया थी कि इस परिवार ने गुरु का भाणा माना, किसी ने दुनियादारों की तरह रोना–पीटना नहीं किया। वही गुरुमुख है, वही शिष्य है जो उस परमात्मा का भाणा माने। यह परमात्मा की दया थी जिसने उनको दया का आधार दिया।

प्यारेयो, अगर हम गुरु को सर्वव्यापक समझते हैं तो अभ्यास में बैठे हुए तो क्या चलते–फिरते हुए भी किसी के बारे में नहीं सोच सकते क्योंकि यह दिल गुरु को दिया होता है। अगर हम किसी ओर के बारे में सोचेंगे तो हम व्यभिचार करने वाली औरत की तरह कर रहे होंगे, व्यभिचारी औरत न पति की रहती है न यार की रहती है। कबीर साहब कहते हैंः

मन दिया कहीं और तन साधा के संग, कहे कबीर कोरी गज्जी कैसे लगे रंग।।

अब दूसरे हिस्से में दवाई–बूटियों का जवाब है। सन्तमत में दवाई–बूटी को बुरा नहीं कहा गया। शरीर की देखभाल करनी भी जरूरी है अगर हमारा शरीर तंदरूस्त है तो हम भजन–सिमरन और सतसंग कर सकते हैं।

कई प्रेमी कहते हैं कि ऐसी दवाईयां खाने से हमारे मन को शान्ति मिलती है। आजकल शौकियां दवाई खाने वालों के लिए अखबारों में बहुत इश्तिहार बाजी होती है। वे कहते हैं कि आओ, हम तुम्हें सदा के लिए जवान कर देंगे। ऐसी दवाईयों में नशे होते हैं जिन्हें खाने से हमारे शरीर के अंदर थोड़ी देर के लिए नशा रहता है जिससे हम शान्त रहते हैं। ऐसी दवाईयां हमारे शरीर के लिए हानिकारक होती हैं।

सन्त दवाई–बूटी को बुरा नहीं कहते लेकिन यह भी बताते हैं कि मौत की कोई दवाई नहीं। वही दवाई कारगर होती है जिस पर प्रभु खुद दया करते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ।।

वही डॉक्टर कामयाब है जो रोग को समझ सकता है। प्यारेयो, अगर हमें कोई शारीरिक कष्ट है तो डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए, दवाई–बूटी करनी चाहिए। दवाई लेते समय सिमरन करें, मन को डोलने मत दें। बीमारी में हम अपने लेन–देन का कर्ज उतार रहे होते हैं। कई छोटे–मोटे रोग तो हमारी लापरवाही के कारण ही हो जाते हैं। बीमारी के समय हम अपने ही कर्मों का भुगतान कर रहे होते हैं क्योंकि हम नहीं जानते कि हमने किस डॉक्टर और किस दवाई वाले का कितना कर्ज देना है।

भोगे बिन भागे नहीं कर्म गति बलवन्त।

बीमारी के समय में प्रेमी गुरु पर भरोसा और भजन सिमरन करना छोड़ देता है, उदास हो जाता है और कहता है, ''देखो जी, मेरी बीमारी ठीक नहीं हुई।'' डॉक्टर में नुख्स निकालने लग जाता है।

एक मशहूर कहानी है कि गोरखनाथ अच्छा जपी–तपी था। उसके सिर में फोड़ा निकला, वह फोड़ा उसके सिर में बारह साल तक रहा। गोरख नाथ ने बहुत से वैद्यों से इलाज करवाया लेकिन वह फोड़ा ठीक नहीं हुआ। गोरखनाथ जहाँ बैठकर तप किया करता था वहाँ एक जड़ी–बूटी थी, उस बूटी ने कहा, ''गोरखनाथ तूने बहुत इलाज किए अगर तू मुझे रगड़कर अपने सिर पर लगा ले तो तेरा फोड़ा ठीक हो जाएगा।''

गोरखनाथ निचले मंडल तक जाया करता था, कर्मों के जाल को अच्छी तरह समझता था। उसने हँसकर बूटी से कहा, ''अब मेरे कर्मों की अवधि पूरी हो चुकी है, मैं तुझे वर देता हूँ कि अब से तेरा नाम गोरखमुंडी हुआ, तू फोड़े फुन्सियों पर ही काम करेगी।'' गोरखमुंडी एक मशहूर जड़ी–बूटी है, यह बूटी अक्सर फोड़े–फुन्सियों पर ही प्रयोग की जाती है।

सन्तमत ही ऐसा मत है जिसमें रिद्धियों–सिद्धियों से काम नहीं लिया जाता। सन्त तो यह कहते हैं अगर प्रभु आप पर दया करते हैं तो आप अपने में से धुआँ तक भी न निकलने दें। ✻✻✻

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...

आप कैसे हैं?

सन्त हर वस्तु को आत्मा के स्तर से देखते हैं, ख्वाहिशों की वजह से इंसान का पुर्नजन्म होता है। दीवार पर की हुई चित्रकारी की तरह हम इस संसार और शरीर की ख्वाहिशों में चिपके हुए हैं और इसे छोड़ नहीं रहे। इच्छाविहीन हो जाएं, वासनाएं और चिंताएं छोड़ दें। ख्वाहिशें कभी कम नहीं होती केवल कब्र ही संसारिक ख्वाहिशों को खत्म कर सकती है।

किसी व्यक्ति या वस्तु की चाहत और उसे प्राप्त करने की तमन्ना ही ख्वाहिश है। जब हमारी कोई ख्वाहिश होती है तो उस ख्वाहिश को प्राप्त करने के लिए हमें दोबारा जन्म लेना पड़ता है। प्यार, चाहत, क्रोध और धन की लालसा ये काल शक्ति के अलग पहलू हैं अगर हमारे रास्ते में कोई रूकावट डालता है तो उसका नतीजा क्रोध होता है। कुछ लोगों को स्वर्ग की ख्वाहिश होती है लेकिन वह भी एक मंडल है और आप वहाँ तक ही जा सकते हैं, हमें उसकी भी ख्वाहिश नहीं करनी चाहिए।

गहराई से विचार करें, क्या आप संसार में फँसना चाहते हैं या परमात्मा के पास जाना चाहते हैं? हम नीचे गिर रहे हैं, ख्वाहिशों के भँवर में डूब रहे हैं फिर भी हम उस पानी से बाहर निकलना नहीं चाहते। आप किसी ऐसे महापुरुष की तलाश करें जो आपको इस मझदार से बाहर निकालने में आपकी मदद कर सके।

हम इस देह के कैदी बन गए हैं अगर आप परमात्मा को जानना चाहते हैं तो आप उसकी तैयारी करें। सबसे पहले यह फैसला करें कि आप संसारी बंदे बनना चाहते हैं या परमात्मा के बंदे बनना चाहते हैं? डाँवाडोल न हों। यह सिर्फ ध्यान पलटने का मसला है, आप यह काम सिर्फ इस देह में रहकर ही कर सकते हैं।

आत्मा परमात्मा की अंश है, जब यह परमात्मा को देखना शुरु करती है तो यह ऊपर जाना चाहती है। दुनिया से मोह छोड़ें, गुरु की भक्ति करने वाले कामयाब हो जाते हैं। आप इस जीवन के रहस्य को इंसानी जामें में ही सुलझा सकते हैं। जो हमारे अंदर से अंधकार को मिटा सकते हैं वही हमारे सच्चे मित्र हैं। यह मोह से मुक्त होने का सवाल है। गुरु आपको मोहमुक्त कर सकते हैं, गुरु की ज्योति की किरणें आपको ऊपर खींच लेंगी।

आप औरों से क्यों पूछते हैं कि **आप कैसे हैं?** आप अपने आपसे पूछें, ''आप कैसे हैं।'' परमात्मा की तरफ जाने वाले मार्ग पर तेजी से

चलें। बहुत से गुरु मान–बड़ाई चाहते हैं, यह इस तरह है जैसे अंधा अंधे की अगुवाई कर रहा है और दोनों गड्ढे में गिरते हैं।

अगर परमात्मा को पाना ही आपका एकमात्र मिशन है तो आपको क्रोध और आवेश त्यागना पड़ेगा। सिर्फ गुरु के दर्शन करने से आपको अमरता नहीं दी जाएगी, आपको गुरु की हिदायतें माननी होंगी अगर आप हिदायतें मानेंगे तो आपको अमरता मिलेगी। आप अपने आप के प्रति ईमानदार रहें क्योंकि गुरु और परमात्मा दोनों ही आपके अंदर निवास कर रहे हैं। दूसरों की न सुनें, परमात्मा को खुश करें। अपने काम से काम रखें। आप अपने आप देखेंगे कि आप कहाँ खड़े हैं, आपने क्या किया है और आप क्या करना चाहते हैं।

आप पिछले सन्तों पर निर्भर न रहें, उनका अपना एक वक्त था। वे हमारी रहनुमाई के लिए जो ग्रंथों में छोड़ गए हैं, उस पर अमल करें। अमरता इसी जन्म में प्राप्त की जा सकती है, मौत के बाद तो झूठी उम्मीद है। परमात्मा को अपने जीवन काल में देखने की कोशिश करें। बीमारी का ईलाज करें और जीवन में कामयाब होने के लिए कदम उठाएं।

अगर आपको गुरु के अंदर परमात्मा की झलक नहीं मिलती तो उसके पास जाने का क्या मतलब है? मीठी खुशबू देने वाले पेड़ के नीचे बैठें। आप संसार की वासनाओं की आग में जल रहे हैं। हम सब परमात्मा की ज्योति के रिश्ते में आपस में भाई–बहन हैं, गुरु की संगत में हम सच्ची मित्रता का सबक सीखते हैं।

जब से हमने परमात्मा की गोद छोड़ी है तब से हम इस संसार में भटक रहे हैं। परमात्मा जो करता है आपके भले के लिए ही करता है। जिसने परमात्मा से मिलने के लिए अपना सत्तारूढ़ जुनून बनाया है, उसके लिए परमात्मा कहेंगे, ''मेरा बच्चा मुझे चाहता है'' और उसके लिए वे अपने मिलने का तमाम इंतजाम करेंगे।

परमात्मा के पास जाने के लिए आपको घर–बार छोड़ने की जरूरत नहीं, अपने घर में रहें आप वहाँ भी कामयाब हो सकते हैं। सबसे एकांत जगह आपके शरीर के अंदर है, उसमें दाखिल हों। इस जन्म में गुरु की तलाश करने की कोशिश करें अगर आपकी गुरु से भेंट हो जाए तो गुरु के हुक्म मानें। जो आपमें नाम का बीज डाल दे वही सच्चा गुरु है।

आँखें आत्मा की खिड़कियां हैं, गुरु की आँखों के जरिए ज्योति की तरंगें मिलती हैं। केवल गुरु को देखना व सुनना काफी नहीं है आपको उनकी हिदायतों पर अमल करना है। जीवन में कामयाब होने के लिए गुरु के सच्चे शिष्य बनें। अब तक होश नहीं आया है तो अब आ सकता है। अब जाग जाएं, अपने अंदर परमात्मा के लिए प्रेम विकसित करें।

जब आप परमात्मा को देख नहीं सकते तो उनसे प्रेम कैसे विकसित करेंगे? गुरु के लिए प्रेम विकसित करें जिन्हें आप देख सकते हैं। गुरु परमात्मा को देखने के लिए आपकी अंतरी आँख खोल सकते हैं। जीवन का सारा रहस्य सही रहनुमाई से सुलझाया जा सकता है। सच्चे गुरु सादे लफ्जों में बयान करते हैं, वे कोई रहस्य नहीं रखते।

अगर बीज भस्म हो गए हैं तो वे कभी नहीं उग सकते इसी प्रकार गुरु हमारी अंतरी आँखों को खोलकर यह दिखा सकते हैं कि परमात्मा सब कुछ कर सकते हैं। हम इस जगह के रहने वाले नहीं, हमारा सच्चा घर कहीं और है। गुरु हमारे कर्मों के बीज को खत्म कर देते हैं ताकि ये फिर से न उग सकें।

गुरु हमारे सच्चे साथी है, वे हमें यहाँ और इसके बाद भी अकेला नहीं छोड़ते बाकी सब देर–सवेर छोड़ जाते हैं। मैं अपने पिता के साथ हूँ, अब मेरे हृदय में कोई दर्द नहीं, मैं अपने सत्तारूढ़ जुनून से मुक्त हो गया हूँ।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

मैं अपने गुरुदेव महाराज सावन-कृपाल का अति धन्यवादी हूँ जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का और अपनी भक्ति करने का मौका दिया, यह सब उन्हीं की दया है। आत्मा और नाम का असला एक ही है लेकिन जब तक यह आत्मा फिर नाम रूप नहीं हो जाती, नाम के साथ नहीं जुड़ जाती तब तक इसे सच्चा सुख और सच्ची शान्ति नहीं मिल सकती।

हमारी आत्मा ने जब से वह शान्ति का देश छोड़ा है, यह सदा ही शान्ति की तलाश में फिर रही है। जब आत्मा मन के मंडल में उतरी तो अपना असला भूल गई, जब कारन देश में आई तो कारन पर्दा चढ़ गया। जब सूक्ष्म देश में आई तो एक पर्दा और चढ़ गया। यह परमात्मा से दूर हो गई, इसका प्रकाश कम हो गया। जब स्थूल देश में आई तो यहां एक और मजबूत पर्दा चढ़ गया। यह संसार में माता-पिता और बहन-भाई बनाकर इसी में शान्ति ढूंढने लगी।

हम देखते ही हैं कि किसी व्यापार में घाटा हो जाए तो बहुत सदमा लगता है, कईयों का हार्ट फेल हो जाता है अगर हमारे साथी जिनके साथ हमारा बहुत लगाव होता है, वे साथ छोड़ जाएं तो हमें सदमा लगता है लेकिन यह आत्मा जिस शान्ति के देश से बिछड़कर आई है, उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिए न हमारा हार्ट फेल होता है और न कोई सदमा ही लगता है कि ओह! मैं किस राजघराने की बच्ची थी लेकिन मन का साथ लेकर आज इन्द्रियों का कूड़ा-करकट ढो रही हूँ।

जिस तरह हमारे गुरुदेव ने हमारे ऊपर दया की है, हमें अपनी भक्ति में बैठने का मौका दिया है। हम सबको जो रास्ता बताया है, हमने प्रेम-प्यार से अभ्यास करना है। हम जिस चीज का रोज अभ्यास करते हैं, उसमें हमें महारत हो जाती है। हाँ भई, आंखें बंद करके अपना अभ्यास करें।***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में 2025 के सतसंगों के कार्यक्रम:

1. 07, 08, 09, 10, 11 व 12 सितम्बर
2. 03, 04 व 05 अक्टूबर
3. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
4. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899